



झाँसी की रानी

सुभद्रा कुमारी चौहान



मुख्य बिंदु

पाठ रानी लक्ष्मीबाई के
जीवनी पर आधारित है।

रानी लक्ष्मीबाई ने
स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों
के खिलाफ आवाज
उठाई।

रानी लक्ष्मीबाई के हौसले
से प्रभावित होकर संपूर्ण
देशवासियों ने उनका
साथ दिया।

रानी लक्ष्मीबाई को किसी
पहचान की आवश्यकता
नहीं है।

पाठ का सार

‘झाँसी की रानी’ कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखा गया है। रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 की स्वतंत्रता संग्राम में उत्साहपूर्वक भाग लेकर भारत वर्ष में लोगों के हृ में फिर से आजादी की आग जला दी थी। लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनु था। वह अपने पिता की इकलौती संतान थी। नाना के साथ बचपन से रहने के कारण उन्होंने सारी युद्ध ला सीख ली साथ ही साथ जोश भी। विवाह के पश्चात वो झाँसी आ गई। राजा की अचानक मृत्यु हो गई जब उनकी कोई संतान नहीं थी। अंग्रेजों ने झाँसी को हड़पना चाहा पर रानी ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। रानी ने अंतिम साँस तक युद्ध किया अंततः उनकी मृत्यु हो गई। पर उन्होंने लोगों में स्वतंत्रता की ज्योति जगा दी। रानी को किसी पहचान की आवश्यकता नहीं है, उनका नाम ही उनकी पहचान है।